सम्पत्ति है; इसके उपयोग से वह जीवन के दुःखों का समाधान कर सकता है। अतः जो इस सुयोग से यथेष्ट उपयोग नहीं लेता, वह कृपण है। इसके विपरीत ब्राह्मण वह है, जो बुद्धिमानी से इस देह का सदुपयोग कर जीवन के क्लेशों से मुक्त हो जाय।

देहात्मबुद्धि के कारण कृपण मनुष्य परिवार, समाज, देश आदि की अत्यधिक आसक्ति में ही अपना सारा समय नष्ट कर देता है। वह प्रायः 'त्वचा रोग' के आधार पर पारिवारिक जीवन अर्थात् कलत्र, पुत्र स्वजनों के प्रति बड़ा आसक्त रहता है। कृपण सोचता है कि वह अपने परिवार का मृत्यु से परित्राण कर सकता है अथवा उसके बन्धु-बान्धव ही कालपाश से उसकी रक्षा कर लेंगे। अपनी सन्तान की परिचर्या करने वाले अधम पशुओं में भी ऐसी स्वजनासक्ति दृष्टिगोचर होती है। अर्जुन बुद्धिमान् है, इसलिए जानता है कि स्वजनों के लिए उसका स्नेह और उन्हें मृत्यु से बचाने की उसकी इच्छा ही उसकी सम्पूर्ण व्यग्रता का कारण है। यह जानते हुए भी कि युद्ध-विषयक कर्तव्य उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, वह कार्पण्य-दोष-वश कर्तव्य का पालन करने में असमर्थ सा हो गया। इसलिए अब परम गुरु भगवान् श्रीकृष्ण से निर्णय करने का आग्रह कर रहा है। वह श्रीकृष्ण का शिष्यत्व ग्रहण करता है; अब सख्यवार्ता नहीं करना चाहता। यथार्थ गुरु-शिष्य का वार्तालाप वास्तव में बड़ा गम्भीर होता है। इस समय अर्जुन भी सद्गुरु से गम्भीर वार्ता करना चाहता है। श्रीकृष्ण भगवद्गीता-विज्ञान के आदि गुरु हैं तथा अर्जुन प्रथम शिष्य है। अर्जुन ने गीता को जिस प्रकार हृदयंगम किया, इसका उल्लेख स्वयं गीता में है। इस पर भी मूर्ख-शिरोमणि प्राकृत विद्वान् यह कहने की धृष्टता करते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण की नहीं, अपितु 'श्रीकृष्ण में स्थित अजन्मा की ही शरण ग्रहण करनी चाहिये।' श्रीकृष्ण के आत्मा और देह में भेद नहीं है—इस सिद्धान्त को न जानते हुए भी जो भगवद्गीता को समझने का प्रयास करता है, वह निस्सन्देह परम मूर्ख है।

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद-
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्।।८।।

27.1

न=नहीं; **हि**=निस्सन्देह; **प्रपश्यामि**=देखता हूँ; **मम**=मेरी; **अपनुद्यात्**=दूर कर सके; **यत्**=जो; **शोकम्**=शोक; **उच्छोषणम्**=सुखाने वाले; **इन्द्रियाणाम्**=इन्द्रियों को; **अवाप्य**=प्राप्त करके; **भूमौ**=पृथ्वी में; **असपत्नम्**=शत्रुविहीन; **ऋद्धम्**=समृद्ध; **राज्यम्**=राज्य को; **सुराणाम् अपि**=देवताओं के भी; **च**=तथा; **आधिपत्यम्**=स्वामित्व को।

अनुवाद

मैं ऐसा कोई उपाय नहीं देखता हूँ, जो मेरी इन्द्रियों को सुखाने वाले इस महान शोक को दूर कर सके। स्वर्गीय देवताओं के समान भूमि के सार्वभौम निष्कण्टक राज्य